Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XV, Issue No. 1, April-2018, ISSN 2230-7540

पं. सवाई गंधर्व

Dr. Pratibha Sharma*

Gold Medalist, M.A., M.Phil., Ph.D. (Music)

सारांश – *किराना घराने की परम्परा में श्री रामाभाऊ कुन्दगोलकर, उर्फ पं. सवाई गंधर्व एक महत्वपूर्ण व प्रमुख नाम हैं। आप किराना घराने की गायकी के प्रवर्तक उस्ताद अब्दुल करीम खां साहब के शिष्य थे। आपकी अद्भुत प्रतिभा, प्रवीणता व प्रबल परिश्रम के फलस्वरूप ही आपको सवाई गंधर्व पद से सम्मानित किया गया। आपने खां साहब की विशिष्ट गायकी को आत्मसात किया। आपके गुरु की भांति आपकी गायकी भी भाव प्रधान थी। किराना घराने की परम्परागत व विशिष्ट गायकी को कायम रखते हुए अन्य प्रभावशाली व सुंदर सांगीतिक प्रभावों के बौद्धिकतापूर्ण व सुंदर समन्वय से आपने अपनी गायकी को अधिक समृद्ध बाया। आपके शिष्य परिवार में भारत रत्न पं. भीमसेन जोशी, गंगूबाई हंगल, पं. फिरोज दस्तूर, कागलकर बुआ, इंदिरा बाई खाडिलकर इत्यादि नाम उल्लेखनीय हैं। एक महान संगीतज्ञ होने के साथ एक महान अभिनेता के रूप में भी आपको गौरवशाली स्थान प्राप्त हुआ। अनेक मराठी नाटकों के लिए भी आपने आकर्षक मंच संगीत प्रदान किया। इस कर्मठ, संगीतमयी सुखद व आनंदमय यात्रा करते हुए* 12 *सितम्बर* 1952 *ई. में आप प्रभु चरणों में लीन हो गए।*

प्रमुख शब्द - *पं. सवाई गंधर्व, उस्ताद अब्दुल करीम खां, किराना घराना, संगीत, गायकी।*

----------X----------

प्रस्तावना

किराना घराने के युग पुरूष खाँ साहब अब्दुल करीम खाँ के षिष्य सवाई गंधर्व इस परम्परा की एक उत्कृष्ट विभूति थे। आपका सम्पूर्ण नाम श्री रामभाऊ कुन्दगोलकर था। संगीत कला में इनकी प्रवीणता और प्रबल परिश्रम के कारण ही आपको 'सवाई गंधर्व' का पद प्रदान करके सम्मानित किया गया। आपका जन्म सन् 1886 ई. में हुआ। बचपन से ही आपका झुकाव संगीत की ओर विषेष रूप से था, किंतु अभिनय भी उनकी दूसरी रुचि थी। वे मराठी थिएटर से जुड़े हुए थे। जिस दिन से उन्होंने अपनी रूचियों पर गंभीरता से ध्यान केन्द्रित किया, उनके अभिनय व गायन योग्यता का निरन्तर विकास होता गया, जिसने उन्हें संगीत जगत् में प्रसिद्ध कलाकार के रूप में प्रतिष्ठित किया।

Rambabu Sawai Gandharva (1886-1952), was a disciple of Ustad Abdul Karim Khan of the Kirana Gharaanaa, whose style bore a strong impression of his ustaad's gaayakee. Well-known disciples are Gangubai Hangal, Bhimsen Joshi and Feroze Dastoor.

कहा जाता है कि बचपन से आपका कंठ संगीत के योग्य नहीं था। उनकी आवाज़ बहुत मधुर नहीं थी, किंतु उन्होंने धैर्यपूर्वक कठोर परिश्रम करते हुए अपनी सतत संगीत साधना से उसे प्रभावी व आकर्षक आवाज़ के रूप में ढाल लिया तथा यह साबित कर दिया कि अभ्यास से सब-कुछ संभव हो सकता है।

आपकी संगीत शिक्षा उस्ताद अब्दुल करीम खाँ के द्वारा सम्पन्न हुई। खाँ साहब ने इन्हें रोजाना आठ-आठ घंटे मेहनत कराकर संगीत साधना कराई और सवाई गंधर्व ने स्वयं भी बड़ी श्रद्धा-भक्ति और लगन के साथ गुरू की सेवा करते हुए संगीत विद्या ग्रहण की। उ. अब्दुल करीम खाँ साहब की एक विशिष्ट गायकी है, और उस सुसज्जित शैली को प्राप्त करने के लिए उस प्रकार की आवाज़ आवष्यक है, और जब तक उस प्रकार की आवाज तैयार नहीं होती, तब तक उस गायकी का प्राप्त होना असंभव ही समझना चाहिए। सवाई गंधर्व को यह आभास था कि प्राकृतिक रूप से उनकी आवाज़ उस शैली के योग्य नहीं है, अतः उन्होंने अपनी आवाज़ के अंगभूत दोष को समझते हुए भी धैर्य के साथ खाँ साहब की गायकी सीखने की प्रतिज्ञा की और इसके लिए उन्होंने अविश्रांत परिश्रम किया।

इस प्रकार सतत् संगीत-साधना के परिणामस्वरूप सोने और सुहागे का संयोग हुआ और एक "संगीत रत्न" का प्रादुर्भाव हुआ। अपने उस्ताद की तरह सवाई गंधर्व की गायकी में भी भाव-पक्ष की ही प्रबलता थी। सवाई गंधर्व अत्यन्त सुरीले गायक थे। चीज़ की बंदिश, लय की तारतम्यता, विलंबित स्वर या बोलों को कहने

www.ignited.in

का ढंग और आलाप के साथ-साथ तानों व बोलतानों की भी उनकी विलक्षण शैली थी, जिसमें उन्होंने महारत हासिल कर ली थी। यद्यपि आपने किराना घराने में तालीम ली थी, किन्तु साथ ही अन्य संगीतिक प्रभावों के लिए भी मुक्त थे, इस विस्तृत प्रवृत्ति के कारण ही आपने अन्य घरानों से भी जो सामग्री मिल सकी उसे ग्रहण किया और अपनी गायकी को अधिक समृद्धशाली बनाया। आपने उ. रहमत खाँ, भास्कर राव बखले, और फैयाज़ मोहम्मद खाँ जैसे संगीतज्ञों की शैली को भी ग्रहण किया। संगीत की विभिन्न महफिलों में आपने अपने गायन से प्रशंसा प्राप्त की। जहाँ एक ओर आप अच्छे गायक थे तो दूसरी ओर एक अच्छे संगीत-शिक्षक भी थे। आपके कई शिष्य इस समय अखिल-भारतीय स्तर के संगीतज्ञ हैं। आपके शिष्य परिवार में पं. भीमसेन जोशी, गंगूबाई हंगल, फिरोज़ दस्तूर, डा. देशपांडे, कागलकर युवा, इंदिराबाई खाडिलकर आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। आपके बहुत से ग्रामोफोन रिकार्ड भी सुरक्षित हैं, जो आपकी गायकी को अमर रखेगें (रिकॉर्ड नं. ECLP 2430 राग शंकरा, बहार, अड़ाना, भैरवी आदि)।

एक महान् संगीतज्ञ होने के साथ-साथ आप एक अभिनेता भी थे। अपने जीवन के लगभग 24 वर्षो तक उन्होंने नाटक मंडलियों में कार्य किया तथा महाराष्ट्र को एक आकर्षक मंच संगीत प्रदान किया। अभिनेता के रूप में वे मंच के गीतों को अधिकतर शास्त्रीय शैली में गाते थे। उस समय की प्रथा के अनुसार आपने "सुभद्रा", "तारा" और "संतसखू" की स्त्री भूमिका तथा "कृष्ण", "दयानंद" इत्यादि पुरूष भूमिकाओं को बखूबी निभाते हुए विशेष ख्याति प्राप्त की।1

सन् 1942 ई. में दुर्भाग्यवश आप पक्षाघात के शिकार हो गये, अच्छे उपचार के प्रभावस्वरूप स्वास्थ्य सुधरने लगा, किन्तु डाक्टरों ने गाने के लिए मना कर दिया। यह उनके लिए किसी सजा से कम नहीं था, किन्तु ईश्वर इच्छा समझकर उन्होंने अपने मन पर संयम रखा फिर भी विशेष अवसरों पर संगीत का वातावरण होने पर आप अपनी विवशता से बहुत दुखी हो जाते। जन्म भर संगीत की उपासना करने वाले इस सफल कलाकार को जीवन के अंतिम 10 वर्षो तक गाना छोड़ देना पड़ा, लेकिन तानपुरे को देखकर वे अपने नेत्रों को छलकने से न रोक पाते। इस तरह उन्होंने किसी प्रकार 10 वर्ष काटे और 12 सितम्बर, 1952 ई. को पूना में, 67 वर्ष की अवस्था में आपका देहावसान हो गया।

निष्कर्ष

अंत में कहा जा सकता है कि पं. सवाई गंधर्व किराना घराने के प्रख्यात व प्रमुख कलाकार थे जिन्होंने किराना घराने की गायकी को प्रचलित किया व साथ ही अपनी बुद्धि व प्रतिभा के बल पर गायकी के अन्य सौंदर्य तत्वों से सुंदर समन्वय से इस गायकी को सुसज्जित किया। एक महान गायक होने के साथ-साथ एक महानच अभिनेता व कलाकार के रूप में भी आपका कार्य अतुलनीय रहा। आप एक महान वाग्गेयकर के रूप में प्रसिद्ध रहे। एक समृद्ध कलाकार के साथ-साथ एक आदर्श गुरु के रूप में आपने कई शिष्य तैयार किए जिनमें भारत रत्न पं. भीमसेन जोशी, गंगू बाई हंगल इत्यादि नाम प्रमुख हैं। भारतीय शास्त्रीय संगीत जगत में आपका योगदान अतुलनीय रहा।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. प्रो. हरिश्चंद्र श्रीवास्तव, हमारे प्रिय संगीतज्ञ पृ. 56
2. Pandit Amarnath-Living Idioms in Hindustani Music (A dictionary of terms and terminology) page no-100.
3. हमारे संगीत रत्न, लक्ष्मी नारायण गर्ग पृ. 395

Corresponding Author

Dr. Pratibha Sharma*

Gold Medalist, M.A., M.Phil., Ph.D. (Music)

www.ignited.in